पाठ 17. आलसी चिंपू

पाठ का परिचय

इस पाठ में एक आलसी लड़के के विषय में बताया गया है। चिंपू एक आलसी लड़का था। वह सुबह देर से सोकर उठता था। फिर गंदा मुँह लिए गंदे कपड़े पहने इधर-उधर घूमता रहता था। नहाने से भी कतराता था। एक सुबह चिड़िया के खिड़की में चहकने से चिंपू की नींद खुल गई। वह चिड़िया के साथ खेलना चाहता था। परंतु उसके बिखरे बालों और गंदे कपड़ों के कारण चिड़िया ने उसके साथ खेलने से इनकार कर दिया। चिंपू चिड़िया के पीछे-पीछे बाग में चला गया। वहाँ तितली ने भी उसके साथ खेलने से मना कर दिया। उसने फूल तोड़ना चाहा तो काँटा चुभ गया। उसने उँगली मुँह में डाली तो गिलहरी ने टोक दिया। आखिर चिंपू एक पत्थर पर बैठकर रोने लगा। तब बंदर ने उसे नीम की टहनी से दातुन करने और नीम के पत्तों को उबालकर उस पानी से नहाने की सलाह दी। चिंपू ने उसकी बात मान ली।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

आलस्य को त्यागो। समय के महत्व को जानो। कर्म करो, कर्म करने से ही जीवन में सफलता मिलती है। आलसी लोग समय के गुज़र जाने पर केवल पछताते ही रहते हैं।

पाठ का वाचन

कहानी का आदर्श वाचन करें।

- कठिन शब्दों के अर्थ बताते हुए वाक्यों का भाव स्पष्ट करें।
- बच्चों को कहानी पढ़ने को कहें।
- बच्चों से एक-एक कर पूछें कि कहानी में उन्हें क्या अच्छा लगा।
- अभिनय के तौर पर भी इस कहानी को बच्चों द्वारा कक्षा में प्रस्तुत करवाएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

चिंपू के चरित्र के बारे में बताते हुए पूछें –

- उसके चरित्र में क्या अच्छा लगा और क्या बुरा?
- आलस्य क्यों नहीं करना चाहिए?
- आलस्य करने से क्या-क्या नुकसान होते हैं?
- काम करना क्यों आवश्यक होता है?
- अच्छे बच्चे कौन होते हैं?